पूर्वाग्रहों से भरी राजस्थान की पाठ्यपुस्तकें*

सुष्मिता बैनर्जी

कक्षा 1 से 5 तक की समस्त पाठ्यपुस्तकों का अवलोकन इस लेख में प्रस्तुत किया गया है। इस अवलोकन में पाठ्यपुस्तक निर्माताओं के जेण्डर के प्रति एवं धार्मिक पूर्वाग्रह साफ नजर आते हैं। साथ ही शिक्षाशास्त्र के लिहाज से भी ये पुस्तकें अस्पष्ट और बेहद कमजोर हैं तथा पाठ्यपुस्तक निर्माताओं के विभिन्न प्रकार के दुराग्रहों और लापरवाही को दर्शाती हैं।

यह समीक्षा राजस्थान पाठ्यपुस्तक मंडल द्वारा निर्मित प्राथमिक स्तर की पाठ्य-पुस्तकों पर केन्द्रित है। मैंने इस समीक्षा में कक्षा एक से पांच तक की सभी विषयों की पुस्तकों को देखा है। इस अवलोकन या समीक्षा को अंतिम रूप देने के लिए अभी बच्चों एवं शिक्षकों से इन पाठ्यपुस्तकों पर चर्चा करना शेष है कि उनकी इन पाठ्यपुस्तकों के बारे में क्या प्रतिक्रिया या राय है। जल्दी ही उनके साथ चर्चा किया जाना प्रस्तावित है। अतः अभी यह प्रथम प्रारूप है। बच्चों के दृष्टिकोण से मैंने ही इन पुस्तकों को देखने का प्रयास किया है। इन पुस्तकों के बारे में मेरे कुछ सामान्य अवलोकन मैं यहां दे रही हूं। इसके बाद मैं पाठ्यपुस्तकों के उदाहरणों को इन सामान्य अवलोकनों की पुष्टि के लिए आप लोगों के सामने रखूंगी।

यह किताबें कतई बाल केन्द्रित नहीं हैं। इन्हें देखने से लगता है कि इनमें पूरी तरह वयस्कों की दुनिया छाई हुई है। बच्चों से वयस्क क्या चाहते हैं ? या वे भावी जीवन में बच्चों को कैसे देखना चाहते हैं ? इन्हीं मूल्यों को आधार बनाकर विषय वस्तु (भारी भरकम जानकारियों) का चयन किया गया है एवं अनुशासन, बड़ों का सम्मान जैसे गुणों को इन पुस्तकों में अहम स्थान दिया गया है। अभ्यास प्रश्नों के माध्यम से पाठ में दी गई जानकारियों को ही दोहराते रहने का आग्रह इन पुस्तकों में है। प्रश्नों में भी कहीं ऐसे प्रश्न नहीं हैं जो बच्चों की दक्षताओं को जानने से संबंधित हों या बच्चा खुद अन्य किताबें देखकर जवाब ढूंढ़े, इस तरह के अभ्यासों के लिए कोई स्थान ये पुस्तकें नहीं देती। भाषा सिखाने में वाक्य विधि और अक्षर विधि का घालमेल नजर आता है। शब्दकोष बढ़ाने की दृष्टि से दिए गए शब्दार्थ मूल शब्दों से ज्यादा कठिन हैं। बच्चों की उम्र के अनुसार विषयवस्तु को नहीं चुना गया है (पहली कक्षा में बैंक का उल्लेख है।)। सिखाने के तौर तरीकों में जानकारी और उपदेश देने के सिवाय और कुछ नहीं है। जो थोडी बहुत गतिविधियां प्रश्नों के तौर पर 'यह भी कीजिए' के रूप में दी गई हैं वे हाशिए पर ही हैं क्योंकि इन पर कोई सवाल नहीं दिए गए हैं। आनन्द पोथी में गीत-कविताएं परिशिष्ट में दी गई हैं जबकि बच्चों को भाषा सिखाने के बेहतर तरीकों में अब यह माना जाता है कि छोटे बच्चों के भाषा पर अधिकार बनाने का कारगर तरीका गीत-कविताएं और कहानियां हो सकती हैं। किसी भी अवधारणा या विचार को समझाने की शुरूआत परिचित व समझ में आने वाली वस्तु से की जानी चाहिए। यह सीखने-सिखाने व संप्रेषण की मूलभूत अवधारणा है लेकिन कक्षा 3 के पर्यावरण अध्ययन की शुरूआत

लेखक परिचय :

गत 22 वर्षों से स्वयंसेवी संगठनों के साथ काम, लम्बे समय तक बच्चों को पढ़ाने के काम के बाद अब विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों में 'जेण्डर एवं शिक्षा' को लेकर बतौर सलाहकार काम कर रही हैं।

सम्पर्क :

60, शांति निकेतन कॉलोनी, बरकत नगर, जयपुर - 302015

* इस लेख को शक्ल देने में प्रेम प्रकाश ने मदद की है।
मैंने इन पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा का काम उरमूल सेतू, बीकानेर की पहल पर किया है।

'पृथ्वी' से की गई है। करीब सभी पाठों के प्रश्नों में सही गलत अंकित करने के सवाल रखे हैं। इस तरह से बच्चों में यह धारणा पननती है कि एक ही जवाब सही होता है।

इस तरह से इन पाठ्यपुस्तकों में सीखने-सिखाने के तौर तरीके व बच्चों की दुनिया का नकारा गया है। इन पाठ्यपुस्तकों में कई प्रकार के पूर्वाग्रह साफ तौर पर झलकते हैं। किताबों में ज्यादातर मुख्य पात्र लड़के अथवा पुरुष हैं। ज्ञान के स्रोत भी पुरुष ही हैं यथा अध्यापक, गुरुजी, दादाजी या पिताजी। कक्षा 1 से 5 तक पुरुष व स्त्री की परम्परागत भूमिकाएं दिखाई गई हैं जैसे लड़की गुड़िया से खेलती है व लड़का गेंद से। इतिहास के बारे में भी कुछ तथ्य गलत हैं। शिवाजी को राष्ट्रवाद के विचार से जोड़ दिया गया है जबकि यह भी माना हुआ तथ्य है कि राष्ट्रवाद जैसी अवधारणा का उदय 19वीं शताब्दी की देन है। इसके साथ ही कुछ अन्य अति महत्वपूर्ण तथ्यों का महत्त्व आंका ही नहीं गया है जैसे पहिये का अविष्कार, मानव के विकास में अंगूठे का महत्त्व। किताबें शहरी मध्यमवर्गीय बच्चों के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं क्योंकि ज्यादातर पात्र शहरी हैं। मकान पक्के हैं। ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जो कि ग्रामीण जीवन में प्रचलित नहीं हैं जैसे, I अक्षर के लिए Ice tray है। इसके अलावा टब, टिफिन, पानी की बोतल, स्कूल बस आदि उदाहरण दिए गए हैं। जो पात्र दर्शाए गए हैं वे एकाध को छोड़कर रईस घरों के हैं जो कि दिए गए चित्रों व वर्णन से पता चलता है। प्राथमिक स्तर की इन सभी किताबों में एकाध पाठ को छोड़कर एक ही धर्म को रेखांकित किया गया है और वह है हिन्दू धर्म।

यदि इन समस्त पाठ्यपुस्तकों को देखकर एक ही पंक्ति में अपनी बात कही जाए तो वह है कि इन पाठ्यपुस्तकों का चरित्र शहरी, रईस, हिन्दू व पुरुष प्रधान है। अब में इस सार संक्षेप के बाद पुस्तकवार अपने मत की पुष्टि के लिए उदाहरण पेश करूंगी।

जेण्डर के प्रति पूर्वाग्रह

आनंद पोथी, प्रथम, कक्षा 1 के पृष्ठ संख्या 1 पर किताब की शुरूआत एक गांव के दृश्य से की गई है। जिसमें महिलाओं एवं बालिका को पानी भरते हुए, पुरुष को ट्रेक्टर चलाते हुए, हल उठाते हुए व चबूतरे पर ठाले बैठे हुए दिखाया गया है। हालांकि पाठ का शीर्षक है 'हमारा गांव' लेकिन ज्यादातर मकान पक्के ही दिखाए गए हैं। और तो और नीचे दिए गए निर्देश में कच्चे मकान पर चर्चा करें, ऐसा कहा गया है। कुल मिलाकर यह चित्र महिलाओं को परम्परागत भूमिका में दर्शाता है एवं पुरुष और स्त्री में गैर बराबरी को दर्शाता है। इसी से लेखकों की विचारधारा का साफ पता चलता है। जेण्डर के प्रति भेदभाव गीतों में भी झलककर आता है जैसे कि पृष्ठ 20 पर बालगीतों में लल्ला-बालक- का तो जिक्र है लेकिन लड़की का कहीं भी जिक्र नहीं है। जैसे -

''आ आ लल्ला, ले रसगुल्ला''
''हम सब बालक सुबह जल्दी से उठ जाते हैं।''

यही पूर्वाग्रह पुस्तक में दिए गए अन्य चित्रों में साफ दिखाई देता है। पृष्ठ 33 पर चार-चार बच्चों में से एक ही लड़की की तस्वीर है। इसी पुस्तक के पृष्ठ 43 पर लिखा हुआ है :-

'पिताजी बाजार से मिठाई लाए।
मां ने सभी को मिठाई दी।''

देखने पर यह मामूली सी बात लग सकती है लेकिन इन सबके माध्यम से स्त्री-पुरुषों की भूमिका को रूढ़ तरीके से ही निर्धारित किया जा रहा है। पृष्ठ 51 पर एक वाक्य है ''ऊषा ने गुड़िया खरीदी मोहन ने गेंद''। क्या यह जरूरी है कि लड़की गुड़िया से ही खेले और लड़का गेंद से ? और यह भी दर्शाया गया है कि बच्चे मेले में दादाजी के साथ गए न कि मां या दादी के साथ। पृष्ठ 53 पर भी इसी तरह की बात है जहां दो लड़कियों को गुड़िया के साथ खेलते हुए चित्र में प्रस्तुत किया है। पृष्ठ 66 पर भी पिताजी ही बाजार जाते हैं।

आनंद पोथी, प्रथम, कक्षा 2 के पृष्ठ 13 पर जो काम महिला को दिया गया वो महिलाओं से संबंधित ही रखा गया है जैसे कि 'लीला काकी चूड़ियां बेचती है।' आनंद पोथी, द्वितीय, कक्षा 2 के पृष्ठ 41 पर केवल पुरुषों को ही खेती व मजदूरी करते दिखाया गया है जबकि गांवों में तो महिलाएं भी खेती व मजदूरी करती हैं। पृष्ठ 60 पर महिलाओं को मुख्य पात्रों से कम ही रखा गया है और जहां रखा भी गया है वहां उनकी भूमिका नकारात्मक ही दिखाई गई है जैसे महिला को दूध में मिलावट करते दिखाया है।

हिन्दी, कक्षा 3 के पृष्ठ 53 पर भी गुरुजी ही मुख्य पात्र हैं। दीदी कहीं नजर नहीं आती है।

अरावली रीडर, कक्षा 5 के पृष्ठ 18 पर अन्य पाठों की तरह ही इसमें भी मुख्य पात्र लड़का 'राजीव' है और अहम स्थानों पर बैठे हुए दो पुरुष हैं। राजीव भाषण प्रतियोगिता में भाग ले रहा है। स्कूल भी बड़ा ही होगा क्योंकि माइक की सुविधा है। वहां भी महिला या लड़की नजर नहीं आती।

हिन्दी कक्षा 5 के पृष्ठ 19 के चित्रों में पुरुष और महिला के विपरीत गुण/लक्षण बताए हैं - एक चित्र में महिलाएं झूला झूल रही हैं और त्यौहार मना रही हैं और उसी पृष्ठ के दूसरे चित्र में पुरुष तिरंगे झण्डे के सामने से परैड कर रहे हैं। महिला वाले चित्र में है - कोमलता, खुशी, खेल व दूसरे चित्र में है वीरता, साहस। पुस्तक का ऐसा विभाजन कहां तक उचित है ?

सामाजिक विज्ञान, द्वितीय, पर्यावरण अध्ययन, कक्षा 5 पृष्ठ 45 ऐसा प्रतीत होता है कि समस्त पाठ्यपुस्तकों के निर्माताओं के मानस में गुरुजी हैं दीदी कहीं नहीं है। यहां मुख्य संवाद गुरुजी

व डॉक्टर के बीच होता है और बच्चों के सवाल को सवाल ही नहीं माना गया है। उदाहरण के लिए - गीता कहती है कि 'आप हमें पहले कौनसी दुर्घटना के प्राथमिक उपचार के बारे में बताएंगे ?

धार्मिक पूर्वाग्रह

आनंद पोथी, प्रथम, कक्षा 1 के पृष्ठ 18 पर निर्देश में दिया गया है कि उपासना स्थलों के नाम जानें और एक ही पृष्ठ पर 6 प्रकार के उपासना स्थलों के चित्र हैं जिनमें से तीन हिन्दू धर्म के हैं। अगर अलग प्रकार के धर्मस्थल दर्शाने थे तो 4 चित्र ही काफी थे। जैसे मन्दिर, गिरजाघर, मस्जिद और गुरूद्वारा। पृष्ठ 65 पर गिनती भी धार्मिक आग्रह से मुक्त नहीं है जैसे -

''नौ नौ नौ, नवरात्रि के दिन नौ।
दस दस दस, रावण के सिर दस।''

आनंद पोथी, द्वितीय, कक्षा 1 के पृष्ठ 19 पर 'य' को सिखाने के लिए 'यज्ञ' है जिसमें एक ऋषि को यज्ञ करते हुए दिखाया गया है। 'य' के लिए 'यान' भी हो सकता था लेकिन अपने धार्मिक पूर्वाग्रहों के चलते यज्ञ को दिखाना और पाठ्यपुस्तक में शामिल करना जरूरी था। ''एक ऋषि गांव में आए। उनके हाथ में त्रिशूल था। वे चौपाल पर बैठे। ज्ञान की बातें बताई। पशु-पक्षियों व वनों की रक्षा करने को कहा।'' इसमें जो चित्र है उसमें एक ऋषि गांव के बीच एक चबूतरे पर बैठे हैं और उनके चारों ओर श्रोता बैठे हुए हैं। इससे जाहिर होता है कि ज्ञान का भण्डार ऋषि ही हो सकते हैं और गांव के लोग सब उन्हें मानते हैं।

हिन्दी, कक्षा 3 के पृष्ठ 66 पर इस पाठ में भी सेठ के अच्छे गुण हैं। वह सेवाभावी है और यहां भी गुरु सदानंद का जिक्र हिन्दुत्व के तौर तरीकों को पाठ में बनाए रखने का एक बहाना है। पृष्ठ 68 पर 'दक्षिणा' शब्द से यह और भी सुदृढ़ हो जाता है। किसी और धर्म के ज्ञानी व्यक्ति को भी रखा जा सकता था। कहीं भी पीर या पादरी नहीं हैं।

हिन्दी, कक्षा 5 पृष्ठ 73 पर मुख्य पात्र हिन्दू संत को बताया है और निर्देश दिया है प्रकृति से प्रेम करने की प्रेरणा दें। इस उद्देश्य के लिए कोई आम साधारण व्यक्ति भी हो सकता था। पृष्ठ 77 पर पाठ 'लव-कुश' है। यहां एक के बाद एक चार पाठ इस तरह के हैं जो हिन्दू धर्म से संबंधित है। जैसे -

पाठ - 5 द्रोणाचार्य और पाण्डव,
पाठ - 6 दशहरा,
पाठ - 13 भक्ति पद, और
पाठ - 15 लव-कुश। स्पष्ट है कि इस धर्म से संबंधित लिखे पाठों का बाहुल्य है।

शिक्षाशास्त्रीय समस्याएं

आनंद पोथी, प्रथम, कक्षा 1 के पृष्ठ 3 पर शरीर के अंग जैसे - हाथ, पैर, आंख, कान, नाक आदि को दर्शाने के लिए एक लड़के को मुख्य पात्र बनाया है। निर्देश में अंगों के नाम, काम व स्वच्छता के बारे में बातचीत करने को कहा गया है। पाठ में सिर्फ निर्देश ही रखे हैं और पाठ से संबंधित कोई गतिविधि नहीं दी गई है। पृष्ठ 17 पर बैंक की अवधारणा को पहली कक्षा के बच्चे कम ही समझ पाएंगे। किताब में सारे स्थल सुख-सुविधापूर्ण दर्शाए गए हैं जैसे बस स्टॉप भी पक्का है। जिस तरह के गांवों में बच्चे रहते हैं उस तरह की वास्तविकता नहीं दिखाई गई और बच्चे इस तरह के चित्रों से कैसे लगाव महसूस करेंगे ? पृष्ठ 19 पर, हालांकि इस पाठ का शीर्षक है कि 'इनको देखें और बनाएं' लेकिन निर्देश में लिखा गया है कि इन आकृतियों को पहचानें जबकि ये आकृतियां अमूर्त हैं और इन्हें बच्चे कैसे पहचान सकते हैं ? पृष्ठ 63 पर गीत-कविताएं परिशिष्ट में हैं, इनको अहम स्थान नहीं दिया गया है जबकि यह जानी हुई बात है कि छोटे बच्चों को भाषा सिखाने का यह बहुत कारगर तरीका है।

आनंद पोथी, द्वितीय, कक्षा 1 के पृष्ठ 3 पर 'घर चल' के बाद का वाक्य है 'अब मन'। यह अपने आप में कोई सार्थक वाक्य नहीं बनता। पृष्ठ 5 पर पहुंचते-पहुंचते ही पाठ्यपुस्तक सीधे अक्षर सिखाने का रास्ता अख्तियार कर लेती है जैसे ज ख आ। जब पाठ्यपुस्तक में वाक्य से अक्षर तक आने की विधि को आरम्भ से अपना रहे हैं तो आगे भी पुस्तक को इसी विधि के अनुसार कार्य करना चाहिए। पृष्ठ 9 पर 'त' को सिखाने के लिए 'जात' शब्द का प्रयोग किया गया है। जिससे पुस्तक निर्माताओं की जातिवादी मानसिकता झलकती है। और इसी पाठ में 'चित' और 'इति' शब्द दिए गए हैं जो कठिन हैं। इसके अलावा कोई अन्य सरल शब्द लिया जा सकता था। पृष्ठ 32 पर औसत की अवधारणा बताई गई है। इस उम्र के बच्चे 'औसत' की अवधारणा कैसे समझ सकते हैं ? पृष्ठ 40 पर निम्न अक्षर दिए गए हैं : जैसे त्रिभुज, नेत्र, ऋचा, ऋण। क्या इस उम्र के बच्चों को ये अक्षर पढ़ाना जरूरी है ? पृष्ठ 67 पर 'मदद' शब्द का अर्थ 'सहायता' व 'रोशनी' का अर्थ 'प्रकाश' दिया है जो कि बच्चों के लिए मूल शब्द से भी कठिन है।

आनंद पोथी, प्रथम, कक्षा 2 के पृष्ठ 42 पर 'धरातल' शब्द का अर्थ कहीं नहीं बतलाया गया और क्या बचत खाता इस उम्र के बच्चों को समझ में आएगा ?

English - learn & Enjoy कक्षा 2 के पृष्ठ 26 पर I से Icetray शब्द दिया है जो कि शहरी शब्द है क्योंकि अक्सर गांवों में रेफ्रिजरेटर नहीं होता है। पृष्ठ 32 पर K को बताने के लिए Knee शब्द दिया गया है। Knee शब्द के उच्चारण में 'न' की ध्वनि आती है 'K' कि नहीं आती। पृष्ठ 64 पर 'Xerox' शहरी

शब्द है और इसका प्रथम अक्षर 'X' है परन्तु उच्चारण Zee से करते हैं।

हिन्दी, कक्षा 3 के पृष्ठ 19 पर एक ही छोटी कविता में 8 नए शब्दों का होना बच्चे को आत्मसात करने में और कविता की खूबसूरती को समझने में कठिनाई हो सकती है हालांकि शब्दकोष बढ़ाना अच्छी बात है। जो शब्द दिए गए हैं वे हैं : अम्बर, अजब, निरन्तर आदि। पृष्ठ 25 पर और भी कई अन्य पाठों में ऐसे शब्द हैं जिनका अर्थ दिया गया है, वह अर्थ मूल शब्द से भी कठिन है। शब्दों के उदाहरण हैं : उदासी-खिन्नता, शुद्ध-निर्मल, सेवन-उपभोग/सेवा करना। ऐसा लगता है कि पुस्तक निर्माता बच्चों को अर्थ बताने की बजाय पर्यायवाची शब्द बता रहे हैं।

हमारा परिवेश (पर्यावरण अध्ययन) कक्षा 3 के पृष्ठ 51 पर जमीन का लेखा-जोखा दिया गया है। क्या इस उम्र के बच्चों को जमीन का लेखा-जोखा समझ में आएगा ? पृष्ठ 124 पर राजस्थान के सात जिलों के बारे में जानकारी को एक ही पाठ में डाल दिया गया है।

पर्यावरण अध्ययन, सामाजिक विज्ञान, प्रथम, कक्षा 4 के पृष्ठ 2 पर शिक्षकों के लिए कुछ ऐसे निर्देश दिए गए हैं जिन्हें कक्षा 4 के विद्यार्थियों के लिए समझाना मुश्किल हो सकता है। जैसे 'विद्यार्थियों को आग की खोज के आधार पर अंतरिक्ष में भेजे जा रहे रॉकेटों की ऊर्जा के प्रयोग के बारे में बताएं। पृष्ठ 3 पर पहिए का अविष्कार दिया गया है। इस आविष्कार को एक ही संक्षिप्त पंक्ति में लिख दिया है और इसका महत्त्व नहीं दर्शाया। इसका महत्त्व दर्शाने के लिए कोई उदाहरण भी नहीं दिए गए हैं। बस इतना ही लिखा है कि, ''पहिए का आविष्कार हुआ।'' दुनिया के सबसे बड़े आविष्कार को इतनी-सी जगह मिली और प्रश्नों में इसका कोई जिक्र भी नहीं किया गया है। इसी तरह अंगूठे का महत्त्व भी कम आंका है। जो कि मानव विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। पृष्ठ 6-7 पर 'हमारा परिवार' पाठ में बच्चों की जो छवि है उसमें उन्हें खुद के चिन्तन को, प्रश्न करने को, तर्क करने आदि को कोई स्थान नहीं दिया है। यहां लिखा है - संयुक्त परिवार में बच्चों को बड़ों का सम्मान करना, उनकी आज्ञाओं की पालना करना, अनुशासन में रखना सिखाते हैं। इसके अलावा संयुक्त परिवार का ही ज्यादा पक्ष लिया है। उदाहरण के लिए कृषि कार्यों से बहुत लाभ हैं। एकल परिवार के लिए लिखा है कि 'उनके प्रायः बच्चे अकेले रहते हैं। वे माता-पिता के अलावा अन्य पारिवारिक संबंधों को नहीं जान पाते एवं दादा-दादी के स्नेह से भी वंचित रहते हैं। जहां तक सीखने-सिखाने की विधि की बात है तो उसमें शिक्षक निर्देश में विद्यार्थियों से चर्चा करने का एक मात्र तरीका दिया गया है। पृष्ठ 23 पर जंगलों का वर्षा से संबंध एक ही वाक्य में कह डाला गया है 'आबू पर्वत तथा बांसवाडा में अधिक वर्षा होती है। यहां घने जंगल हैं।' इस बात को विस्तार से समझाने की जरूरत है अन्यथा ये बच्चों को बेतुका लग सकता है। पृष्ठ 33 पर शुक्ल पक्ष का जिक्र कई बार आया है पर कहीं भी शुक्ल पक्ष को समझाया नहीं गया है। पृष्ठ 73 पर 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली दी गई है। क्या कक्षा 4 का बच्चा 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली' को समझ पाएगा ?

पर्यावरण अध्ययन, द्वितीय, कक्षा 4 के पृष्ठ 40 पर चौथी कक्षा के बच्चों को गुरुत्व बल कहां तक और कैसे समझाया जा सकता है ? क्या यह जरूरी है कि इसे इसी उम्र में पढ़ाया जाना चाहिए ?

Aravali Reader, कक्षा 5 के पृष्ठ 81 पर करीब सभी पाठों के प्रश्नों में जवाब को सही-गलत के रूप में अंकित करने के सवाल रखे गए हैं। इस तरह के प्रश्नों को देखकर बच्चों की यह धारणा बनती है कि एक ही सही जवाब होता है जबकि सीखने-सिखाने की पद्धति में यह मानी हुई बात है कि एक से ज्यादा जवाब सही हो सकते हैं।

हिन्दी, कक्षा 5 के पृष्ठ 63 पर पाठ 'मेरी कहानी मेरी जुबानी' एक आत्मकथा के रूप में लिखा है लेकिन पढ़ने पर लगता है कि इसके माध्यम से केवल सूखी जानकारी दी जा रही है। आत्मकथा को पढ़कर मन में कोई भाव नहीं जागता। पृष्ठ 69 पर भक्तिपद में कबीर को शामिल नहीं किया गया है और हम सभी जानते हैं कि कबीर को पढ़ते हुए सवाल उठाने और तार्किकता जैसे मूल्य उत्पन्न होते हैं। हर पाठ के अन्त में शब्द-अर्थ दिया गया है जिसमें बच्चों का नए शब्दों से परिचय कराया जाता है। अनुमान है कि बच्चे इनको रटते हैं और साथ ही पाठ में अगर ज्यादा नए शब्द हो तो पढ़ने का आनंद नहीं आता है, उदाहरण के लिए पृष्ठ संख्या 93 पर 17 में 16 नए शब्द हैं। पृष्ठ 101 पर दिए प्रश्नों में पहली बार रचना के शीर्षक का प्रश्न है लेकिन रचना केवल पत्र लिखने तक सीमित है और वह भी वर्णन विधा में है। पृष्ठ 105, पाठ 20 पर 'गुरु भक्त कालीबाई' है। इन पूरी पाठ्यपुस्तकों में यह एक मात्र पाठ है जिसमें मुख्यपात्र एक आदिवासी है और वह भी एक लड़की है। लेकिन पाठ के अन्त में शब्दों के अर्थ में 'आदिवासी' का अर्थ दिया है 'मूल निवासी' जो कि शायद बच्चों को समझ में न आए।

सामाजिक विज्ञान, प्रथम, पर्यावरण अध्ययन, कक्षा 5 के पृष्ठ 8 पर अन्तरिक्ष में कृत्रिम उपग्रह का जिक्र है जो कि एक बहुत ही जटिल अवधारणा है। पृष्ठ 11 पर गुणवत्ता, मानक जैसे शब्द हैं और इनके अर्थ कहीं नहीं दिए गए हैं। क्या बच्चा इन्हें समझ पाएगा ? पृष्ठ 29 पर ऐसी अवधारणाएं हैं जैसे जिला उद्योग केन्द्र, जिला रोजगार कार्यालय, ऋण आदि। क्या 10-11 साल के बच्चों के लिए इन्हें समझना मुश्किल नहीं होगा ? ज्यादातर सामग्री

का चयन या पाठ इस दृष्टि से लिखे गए हैं कि वयस्क बच्चों के बारे में क्या सोचते हैं और बच्चों को क्या सिखाना चाहते हैं ? इन पाठ्यपुस्तकों के केन्द्र में बच्चे नहीं हैं बल्कि वयस्कों की दुनिया है। पृष्ठ 74 पर संदर्भ में विवरण कई जगह गायब हैं और वाक्य अधूरे से लगते हैं। ऐसा एक वाक्य है जैसे 'मंगल पाण्डे ने कारतुस के मामले पर सेना में विद्रोह कर दिया।' ये नहीं समझाया गया है कि मामला दरअसल था क्या? घटनाओं की इस तरह की प्रस्तुति से बच्चों को बिना समझे रटने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। पृष्ठ 128 पर रमन के सिद्धान्त का जिक्र करते हुए लिखा है कि 'प्रकाश का रंग परिक्षेपण द्वारा बदल जाता है'। कहीं इसका अर्थ नहीं समझाया गया है। यही ऐसे विवरण हैं जिनके समझ में नहीं आने पर बच्चे रटने की प्रवृति की तरफ जाते हैं।

शहरीकरण और मध्यम वर्गीय जीवन केन्द्रित

आनंद पोथी, प्रथम, कक्षा 1 के पृष्ठ 11 पर चारों चित्र शहरी है जिनमें बच्चे वास बेसिन पर खड़े होकर ब्रश कर रहे हैं। लड़की-लड़के पलंगों से उठ रहे हैं। पृष्ठ 16 पर प्राथमिक शाला में बगीचा, फिसलपट्टी, सुन्दर-सा पक्का मकान है जो कि ग्रामीण स्कूलों में कम ही नजर आता है।

आनंद पोथी, द्वितीय, कक्षा 1 के पहले पृष्ठ पर 4 चित्र हैं और वाक्य से पढ़ाने की विधि है। वाक्य है 'घर चल' पर जो घर दर्शाया गया है वह दो मंजिला शहरी है और 'र' अक्षर के लिए 'रथ' दिखाया गया है जो शायद बच्चों के लिए अपरिचित है। इसी तरह 'च' के लिए 'चम्मच' दिखाया गया है जो कि ग्रामीण परिवेश में कम ही उपयोग में आता है। इसकी जगह 'चाबी' जैसा शब्द रखा जा सकता था। 'ल' के लिए 'लड़का' दिया गया है। इसकी जगह लड़की हो सकती थी। इस तरह चारों चित्र में एक प्रकार का दृष्टिकोण झलकता है। पृष्ठ 23 पर बच्चों को खाना खाते हुए दर्शाया गया है। एक साथ दाल, रोटी, चटनी, आलू का साग, रायता और खीर किसी सहेली को खिलाने के लिए दिखाई गई है। गांव में कहां इतना सारा खाना होता है ?

आनंद पोथी, प्रथम, कक्षा 2 के पृष्ठ 19 पर यहां फिर से शहरी माहौल दर्शाता है। इसमें पानी की बोतल का जिक्र है जो गांव के बच्चे स्कूल में नहीं ले जाते हैं।

हिन्दी, कक्षा 3 पृष्ठ 40 पर शहरी बच्चों के नाम हैं और शहरी अनुभव ही ज्यादा दर्शाए गए हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों के नाम हैं किंशुक और नुपूर। पृष्ठ 70 पर 'एक-एक कर सब बच्चे पार्क में इक्टठे हो गए'। गांवों में पार्क की अवधारणा कम ही होती है, ये अवधारणाएं शहरी हैं।

हमारा परिवेश (पर्यावरण अध्ययन), कक्षा 3 पृष्ठ 18 पर जो दर्शाया गया है यह तो उच्च वर्गीय घरों में ही संभव है जहां हर व्यक्ति के लिए एक तौलिए के लिए पैसे हैं। किताब में इस तरह की आदर्श बातें हैं जिन्हें वस्तु स्थिति में लागू करना मुश्किल है।

पर्यावरण अध्ययन, प्रथम, सामाजिक विज्ञान, कक्षा 4 के पृष्ठ 10 पर पाठ 3 'हमारी आवाश्यकता' की शुरूआत ऐसे होती है - 'हम सवेरे उठने के बाद मंजन करने, नहाने, खाना खाना, विद्यालय जाना, पढ़ना आदि कार्य करते हैं। ये हमारे दैनिक कार्य हैं।'' पूरी किताब में एक ही प्रकार के बच्चों के बारे में लिखा है जो बच्चे गरीब हैं या ड्रॉप आऊट हैं उनके बारे में, उनके जीवन के बारे में कुछ नहीं लिखा है।

अरावली रीडर, अंग्रेजी, कक्षा 4 पृष्ठ 92 पर जो परिवार का चित्र दर्शाया गया है वह बेहद शहरी और उच्च वर्ग का है जिसमें पुरुष ने शर्ट व टाई पहनी है।

इन सब के बीच हम कहना चाहते हैं कि इन पाठ्यपुस्तकों में बहुतायत में ग्रामीण जीवन की अवहेलना की गई है और ये अल्पांश शहरी जीवन को चित्रित करती हैं। यह चित्रण बच्चों को अपने परिवेश से काटकर दूसरों के परिवेश को अपनाने जैसा है।

मूल्यबोध

आनंद पोथी, द्वितीय, कक्षा 2 के पृष्ठ 5 पर ''दुकानदार तुम बेईमान हो, सामान कम तोलते हो, मिलावट करते हो, तुम्हारी शिकायत करूंगी।'' यहां तक तो लोमड़ी ने सही कहा लेकिन इससे आगे उसने अपना स्वार्थ जोड़ दिया कि ''मुझे गुड़ की भेली दो।'' दुकानदार की प्रतिक्रिया थी कि लोमड़ी धूर्त है। इस तरह से मूल्य में घालमेल कर दिया गया है, जहां लोमड़ी को सच बोलते हुए दिखाया और साथ ही उसका स्वार्थ भी बताया है। बच्चों के मूल्य बनाने में बाधा उत्पन्न हो सकती है। पृष्ठ 52 पर मूल्य आधारित पाठ में किसी बच्चे के फटे कपड़े और बिखरे बाल देखकर दया की भावना कहां तक उचित है और दया में क्या सामने वाले व्यक्ति कम नहीं समझते ?

English - Learn & Enjoy कक्षा 2 के पृष्ठ 71 पर सुन्दर की अवधारणा गोरपान और नीली आंखें बताई गई है जो कि एक विदेशी अवधारणा है। यहां सुन्दरता को भी स्थूल अर्थ में ही देखा जा रहा है।

हिन्दी, कक्षा 3 के पृष्ठ 5 पर किताब में कई जगह यह लिखा है कि पूंजीपति लोगों के पास ही मानवीय गुण हैं। उदाहरण के लिए, सेठ धनराज बड़ा दयालु व्यक्ति था। पृष्ठ 10 पर मगन के बारे में लिखा है कि वह बड़ों की बात कभी नहीं काटता। क्या सवाल पूछने के मूल्य को प्रोत्साहन देना जरूरी नहीं है। मगन को बहुत ज्यादा आदर्श पात्र बताया गया है जिससे अधिकतर बच्चे मगन से पहचान स्थापित नहीं करते। पूरा पाठ कृत्रिम लगता है।

कहीं भी मगन में बाल स्वभाव नहीं छलकता।

हिन्दी, कक्षा 5 के पृष्ठ 57 पर इस पाठ में विपरीत भावनाएं दर्शाई गई हैं। एक तरफ तो कहा गया है कि, ''सीमा पार के दुश्मन का एक ही धर्म है, खुदा के बंदों पर कहर ढाना। वे हमें शान्ति से जीने नहीं देना चाहते।'' और दूसरी तरफ निर्देश में लिखा गया है कि, ''बालकों में पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम व जीव मात्र के प्रति दया के भाव उभारने का प्रयास करें।'' पृष्ठ 89 पर निर्देश में लिखा गया है कि, 'शिक्षाप्रद जातक कथा सुनाएं' यह एक आम दृष्टिकोण है कि बच्चों को शिक्षाप्रद कहानियां ही सुनानी चाहिए और अन्त में पूछना कि इस कहानी से क्या शिक्षा मिली ? यह धारणा बच्चों की उम्र, उनकी दुनिया सबको नकार देती है। पृष्ठ 119 पर 'यह भी करो' में प्रेरक प्रसंगों का संकलन करने को कहा है। यह प्रौढ़ों की बच्चों के प्रति दृष्टि है कि उन्हें कुछ न कुछ सिखाते रहना चाहिए जबकि बच्चों की दुनिया देखें, उनकी उम्र देखें तो उन्हें हंसना, हंसाना, खेलना बेहद पसंद है। इन पाठों में हास्यप्रद एवं व्यंग्यात्मक प्रसंग कहीं शामिल नहीं हैं। पृष्ठ 120 पर निर्देश में लिखा है कि दया, ईमानदारी, परोपकार के जीवन मूल्य विकसित करें। बच्चों के अपने किस्से, उनके सहपाठियों के किस्से कहीं भी शामिल नहीं हैं जबकि सीखने-सिखाने के सिद्धान्त हैं कि बच्चे सहपाठियों और निजी अनुभवों से बेहतर सीखते हैं। पृष्ठ 144 पर निर्देश में लिखा है कि, 'बड़ों के प्रति सम्मान का जीवन मूल्य विकसित करें।' कहीं नहीं लिखा गया है कि बच्चों का भी सम्मान करें जबकि सीखने-सिखाने का पहला सिद्धान्त है बच्चों का आदर करना।

अन्य टिप्पणियां

पर्यावरण अध्ययन, प्रथम, कक्षा 4 के पृष्ठ 1 पर 'मेरी कहानी' शीर्षक पाठ में आदिमानव के बारे में बताया गया है। उसमें ऐसे वाक्य है जिसमें शोध की कमी दिखती है और गलत तथ्यों का विवरण है। उदाहरण के लिए 'आदिमानव खाली समय में गुफाओं में बैठकर जानवरों एवं पेड़-पौधों के चित्र बनाते थे।'' इतिहास के शोधों ने बताया है कि यह चित्रकारी मनोरंजन के लिए नहीं थी बल्कि शिकार के तौर-तरीकों से संबंधित थी। पृष्ठ 31 पर पाठ का शीर्षक 'ठोस' है। ठोस वस्तुओं में बर्फ को भी शामिल किया है और आगे यह भी लिखा है 'ठोस पदार्थों का आकार निश्चित रहता है। इन्हें कहीं भी, कैसे भी रखने पर आकार नहीं बदलता है। बर्फ के बारे में ऐसा वाक्य पाठ्यपुस्तक निर्माताओं की समझ का ही परिचायक है। पृष्ठ 54 चित्रों को पहचानकर जवाब देने पर आधारित है लेकिन चित्र स्पष्ट नहीं हैं।

अरावली रीडर, कक्षा 5 के पृष्ठ 8 का शीर्षक है 'A Farmer'। लेकिन चित्र में जिस किसान को दर्शाया गया है वह रईस है। उदाहरण के लिए चित्र में किसान ट्रेक्टर में बैठा है और उसका घर पक्का हैं उसके दो गाय हैं, एक भैंस हैं और एक जोड़ी बैल भी हैं। शाम को वह व उसका परिवार टी.वी. देखता है। पृष्ठ 21 पर जो स्कूल का विवरण है वह दूरदराज के गांव के बच्चों को शायद ही नसीब हो, जो विवरण दिया गया है उसमें भवन को बहुत बड़ा और सुन्दर दिखाया गया है और तो और उसमें 20 कमरे हैं, दो दफ्तर हैं। 1. प्रधानाध्यापक के लिए व 2. बाबूओं के लिए। यह पत्र के विधा में लिखा हुआ पाठ है लेकिन स्कूल के विवरण के अलावा नमस्ते भी नहीं कहा गया है और न ही हालचाल पूछा है।

हिन्दी, कक्षा 5 के पृष्ठ 8 पर मुख्य पात्र देवा किसी दुःख से बीमार हो गया था। और वह किसी को नहीं बता रहा था कि क्या बात है। लेखकों का दृष्टिकोण इस बात से जाहिर होता है कि सरपंच जी के बहुत समझाने पर देवा बोला। यानी किसी ओहदे वाले के बिना काम नहीं चलता है। पृष्ठ 48 पर 'रडार' जैसे कठिन विषय को शामिल करने की जरूरत समझ में नहीं आ रही है। साथ ही उसका प्रस्तुतिकरण नीरस है। लेकिन इस रोचक तथ्य को उनके अनुभव से जोड़कर भी सिखाया जा सकता है। जैसे चमकादड़ में भी रडार है जो आस-पास की दुनिया से संबंधित है। इससे कौतुहल की भावना भी जागृत होती। पृष्ठ 138 पर ऐतिहासिक रूप से गलत तथ्य दिया है। पाठ में शिवाजी कहते हैं, ''रात दिन मैं इसी चिन्ता में रहता हूं कि किस प्रकार भारत माता का दुःख दूर करूं।'' राष्ट्रीयता का विचार 19वीं सदी की देन है जबकि मराठा साम्राज्य के शिवाजी 17-18वीं सदी में थे। इन सभी पुस्तकों में वर्तनी की भरपूर अशुद्धियां हैं जिनके हवाले देने में अपने आप में एक लेख बन जाएगा।

सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन, द्वितीय, कक्षा 5 पृष्ठ 63 में 'हमारा आवास' शीर्षक पाठ में दादी नीता से कहती है कि, ''जिन मकानों में शुद्ध हवा तथा रोशनी का आवागमन हो, जिसके अंदर व बाहर गंदगी न हो, शौचालय की व्यवस्था हो, नालियां साफ-सुथरी व ढकी हुई हो वही मकान हमारे लिए स्वास्थ्यप्रद है।'' जैसा कि चित्र 10.1 में दिखाया गया है। चित्र में तीन घर दिखाए गए हैं जिनमें दो मिट्टी के हैं और चित्र 10.1 अ में पक्का और एक मंजिला है। जाहिर है कि ऐसा घर कुछ ही लोगों के पास हो सकता है। फिर से इस पाठ में भी सफाई और रोशनी का हवाला देते हुए आखिर रईस के प्रति ही झुकाव है।

अंत में, इन पाठ्यपुस्तकों के बारे में यह कहा जा सकता है कि शिक्षाशास्त्र की समझ की दरिद्रता, तमाम तरह के पूर्वाग्रहों को केन्द्र में रखकर ये पुस्तकें बनाई गई हैं। ये पाठ्यपुस्तकें बच्चों को कुछ दक्षताएं सिखाने के बजाय ऐसे मूल्यों और ज्ञान को बच्चों तक संप्रेषित करेंगी जो कि बच्चों को भी पूर्वाग्रही और जानने समझने के बजाय दिए गए ज्ञान को सिर्फ आत्मसात करने वाला बनाएंगी। ◆